



पशुधन संकल्प

e - Magazine

Available online at
<https://psem.vitalbiotech.org>

Article ID: PS/26/13

बछियों की देखभाल एवं प्रबंधन



डॉ. अंकेश कुमार

प्राध्यापक, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-800014

परिचय

पशुपालकों के लिए सरल हिन्दी में जानकारी

डेयरी पशुपालन में बछिया भविष्य की दुधारू गाय या भैंस होती है। इसलिए बछिया की जन्म से लेकर प्रथम ब्यांत तक उचित देखभाल करना बहुत आवश्यक है। यदि बछिया को अच्छा पोषण, स्वच्छ आवास, रोगों से सुरक्षा और सही समय पर प्रजनन सुविधा मिले, तो वह स्वस्थ एवं अधिक दूध देने वाली गाय या भैंस बन सकती है। बछियों की उपेक्षा करने से उनकी वृद्धि रुक सकती है, प्रजनन में देरी हो सकती है तथा भविष्य में दूध उत्पादन भी प्रभावित हो सकता है।

1. बछियों का उचित शारीरिक विकास

बछिया की उम्र बढ़ने के साथ उसका शरीर वजन और आकार भी लगातार बढ़ना चाहिए। पशुपालक को केवल उम्र पर ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि बछिया के शरीर की वृद्धि, वजन और स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए। कमजोर और दुबली बछिया को जल्दी गर्भित नहीं कराना चाहिए।



लेख इतिहास

Received : 20. 08.2026
 Revised : 26. 08.2026
 Accepted : 03. 09.2026



अनुरूपी लेखक

अंकेश कुमार*

E-mail ID:

dr43ankesh@gmail.com



Open Access

This article is published under the terms of the
[Creative Commons Attribution License 4.0.](#)

प्रजनन के लिए बछिया का पर्याप्त शारीरिक विकास होना आवश्यक है। अच्छी वृद्धि के लिए संतुलित आहार, हरा चारा, सूखा चारा, दाना, खनिज मिश्रण और स्वच्छ पानी देना चाहिए। समय-समय पर बछिया के शरीर का वजन अथवा शरीर की स्थिति का निरीक्षण करना चाहिए। यदि बछिया अपेक्षित रूप से नहीं बढ़ रही है तो उसका कारण पता लगाना चाहिए, जैसे पोषण की कमी, पेट के कीड़े या कोई बीमारी।

2. नर और मादा बछड़ों को अलग रखना

नर और मादा बछड़ों को लगभग 6 माह की आयु तक साथ रखा जा सकता है। इसके बाद उन्हें अलग-अलग रखना उचित होता है। ऐसा करने से अनियंत्रित प्रजनन की संभावना कम होती है और दोनों प्रकार के पशुओं को उनकी आवश्यकता के अनुसार भोजन एवं देखभाल मिल सकती है।

बछियों को उनकी उम्र और आकार के अनुसार समूह में रखना चाहिए। बहुत छोटी और बड़ी बछियों को एक साथ रखने से बड़ी बछियां छोटी बछियों को भोजन से दूर कर सकती हैं। कमजोर बछियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

3. चराई द्वारा बछियों का पालन

जिन पशुपालकों के पास पर्याप्त चरागाह भूमि है, वे बछियों को चराई प्रणाली से पाल सकते हैं। चरागाह में बछियां प्राकृतिक रूप से घूमती-फिरती हैं और घास खाती हैं। इससे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। लेकिन सीमित चरागाह पर बहुत अधिक पशु नहीं रखने चाहिए। अधिक पशु होने पर घास जल्दी समाप्त हो जाती है और सभी पशुओं को पर्याप्त पोषण नहीं मिलता। चरागाह को अलग-अलग भागों में बांटकर बारी-बारी से चराई करानी चाहिए। इसे रोटेशनल ग्रेजिंग कहते हैं। इससे घास को पुनः उगने का समय मिलता है और चरागाह की गुणवत्ता बनी रहती है। चरागाह में

हरे चारे के साथ दलहनी चारा जैसे बरसीम, लूसर्न या लोबिया उपलब्ध हो तो बछियों की वृद्धि बेहतर होती है क्योंकि इनमें प्रोटीन की मात्रा अच्छी होती है। चरागाह में हमेशा स्वच्छ पानी और छाया की व्यवस्था होनी चाहिए। गर्मी के मौसम में पेड़ या शेड की छाया पशुओं को गर्मी से बचाती है।

4. बाड़े में रखकर बछियों का पालन

जिन पशुपालकों के पास चरागाह उपलब्ध नहीं है, वे बछियों को बाड़े या पशुशाला में रख सकते हैं। पशुशाला साफ, सूखी और हवादार होनी चाहिए। बछियों को पर्याप्त जगह मिलनी चाहिए ताकि वे आराम से बैठ और खड़ी हो सकें। फर्श फिसलन वाला नहीं होना चाहिए। गोबर और मूत्र की नियमित सफाई करनी चाहिए। बाड़े में रखी बछियों को हरा चारा, सूखा चारा और आवश्यकता के अनुसार दाना देना चाहिए। केवल सूखे भूसे पर बछियों को नहीं पालना चाहिए क्योंकि इससे उनका उचित विकास नहीं हो पाएगा। बढ़ती हुई बछियों को प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज और विटामिन की आवश्यकता होती है। इसलिए संतुलित आहार देना अत्यंत आवश्यक है।

5. सांद्र आहार और खनिज मिश्रण

बछिया की उम्र और शरीर के वजन के अनुसार दाना देना चाहिए। छोटी बछियों को कम मात्रा में और बड़ी या गर्भित बछियों को आवश्यकता अनुसार अधिक पोषण देना पड़ता है।

सामान्य रूप से बढ़ती बछियों को:

- अच्छी गुणवत्ता का हरा चारा,
- सूखा चारा,
- संतुलित दाना,
- खनिज मिश्रण,
- नमक और
- स्वच्छ पानी मिलना चाहिए।

खनिज मिश्रण हड्डियों की वृद्धि, शरीर विकास और भविष्य की प्रजनन क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से कैल्शियम और फास्फोरस की उचित मात्रा आवश्यक होती है।

6. स्टीमिंग अप अर्थात प्रसव पूर्व अतिरिक्त पोषण

गर्भित बछिया को प्रसव से कुछ समय पहले अतिरिक्त पोषण देना स्टीमिंग अप कहलाता है। प्रसव के अंतिम चरण में गर्भस्थ बछड़े की वृद्धि तेजी से होती है और मां के शरीर को भी आगामी दुग्ध उत्पादन के लिए तैयार होना पड़ता है। इस समय धीरे-धीरे सांद्र आहार की मात्रा बढ़ाई जा सकती है। अचानक अधिक मात्रा में दाना नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे पाचन संबंधी समस्या हो सकती है।

स्टीमिंग अप के लाभ हैं:

- गर्भस्थ बछड़े की अच्छी वृद्धि।
- मां के शरीर को पर्याप्त पोषण।
- प्रसव के बाद दूध उत्पादन की तैयारी।
- शरीर की कमजोरी को रोकना।

7. सही आयु और वजन पर प्रजनन

बछिया को केवल उम्र के आधार पर गर्भित नहीं कराना चाहिए। उसका शरीर वजन, नस्ल, स्वास्थ्य और शारीरिक विकास भी महत्वपूर्ण हैं। अच्छे पोषण और प्रबंधन वाली बछियां जल्दी प्रजनन योग्य हो सकती हैं। जबकि कमजोर और कुपोषित बछियों में प्रजनन की उम्र देर से आती है। बहुत कम उम्र में गर्भित कराने से बछिया की अपनी शारीरिक वृद्धि प्रभावित हो सकती है। प्रसव में कठिनाई भी हो सकती है। इसलिए पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार उचित उम्र और शरीर वजन प्राप्त करने के बाद ही प्रजनन कराना चाहिए।

8. बछियों को प्रशिक्षण देना

छोटी उम्र से बछियों को मनुष्यों के संपर्क में रखना चाहिए। उन्हें प्यार से संभालना

चाहिए और रस्सी या हैल्टर से चलने का अभ्यास कराना चाहिए। ऐसा करने से पशु शांत और सहयोगी बनता है। भविष्य में कृत्रिम गर्भाधान, उपचार, जांच और दूध दुहने में सुविधा होती है। प्रसव से लगभग एक माह पहले गर्भित बछिया को पशुशाला के वातावरण से परिचित कराना उपयोगी होता है। उसके थन को स्वच्छ पानी से धोकर हल्के हाथ से छूने की आदत डाली जा सकती है, ताकि प्रसव के बाद दूध दुहते समय पशु अधिक उत्तेजित न हो।

9. व्यायाम का महत्व

बछियों के स्वस्थ विकास के लिए चलना-फिरना आवश्यक है। जो बछियां खुले चरागाह में रहती हैं, उन्हें सामान्यतः पर्याप्त व्यायाम मिल जाता है। लेकिन जो बछियां हमेशा बाड़े में रहती हैं, उन्हें प्रतिदिन कुछ समय खुले स्थान पर घूमने देना चाहिए।

व्यायाम से:

- मांसपेशियां मजबूत होती हैं।
- भूख अच्छी लगती है।
- पाचन बेहतर होता है।
- हड्डियों का विकास अच्छा होता है।
- पशु चुस्त और स्वस्थ रहता है।

10. पेट के कीड़ों और बाहरी परजीवियों का नियंत्रण

पेट के कीड़े बछियों की वृद्धि को बहुत प्रभावित कर सकते हैं। कृमि संक्रमण से बछिया कमजोर हो जाती है और उसका शरीर वजन नहीं बढ़ता। पशुपालक को पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार समय-समय पर कृमिनाशक दवा देनी चाहिए। अनावश्यक रूप से बार-बार दवा नहीं देनी चाहिए। जूं, किलनी और अन्य बाहरी परजीवी भी पशु को परेशान करते हैं। पशुशाला की सफाई और नियमित निरीक्षण से इनका नियंत्रण किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सक द्वारा अनुशंसित दवा का प्रयोग करना चाहिए।



11. टीकाकरण

बछियों को संक्रामक रोगों से बचाने के लिए नियमित टीकाकरण आवश्यक है। पशुपालक को अपने क्षेत्र के पशु चिकित्सक से संपर्क करके सरकारी टीकाकरण कार्यक्रम की जानकारी लेनी चाहिए। खुरपका-मुंहपका, गलाघोंटू, ब्लैक क्वार्टर और अन्य स्थानीय रोगों के विरुद्ध टीकाकरण क्षेत्रीय कार्यक्रम के अनुसार कराया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

बछिया भविष्य की दुधारू गाय या भैंस है। इसलिए उसकी देखभाल को खर्च नहीं बल्कि

भविष्य में निवेश समझना चाहिए। अच्छी बछिया प्रबंधन के लिए उचित पोषण, स्वच्छ आवास, पर्याप्त पानी, नियमित व्यायाम, कृमि नियंत्रण, टीकाकरण और उचित समय पर प्रजनन आवश्यक है। यदि पशुपालक जन्म से लेकर प्रथम ब्यांत तक बछिया की सही देखभाल करता है, तो वह स्वस्थ, मजबूत और अधिक उत्पादन देने वाला पशु तैयार कर सकता है। इसलिए प्रत्येक डेयरी पशुपालक को यह सिद्धांत अपनाना चाहिए:

“आज की स्वस्थ बछिया ही कल की अधिक दूध देने वाली गाय या भैंस है।”